IJAER/Nov-Dec 2022/Volume-11/Issue-6 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Research

माध्यमिक स्तर के सीबीएसई एवं यूपी बोर्ड के विद्यालयों में कार्यरत हिंदी विषय के अध्यापकों में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के प्रति जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन

पूनम सिंह
शोध छात्रा
शिक्षक -शिक्षा संकाय
ग्लोकल विश्वविद्यालय,
सहारनपुर (उ0प्र0)

डॉ. वी. के. शर्मा
शोध पर्यवेक्षक
प्रोफेसर – शिक्षा संकाय
ग्लोकल विश्वविद्यालय,
सहारनपुर (उ0प्र0)

सारांश – प्रस्तुत अध्ययन में **माध्यमिक स्तर के सीबीएसई एवं यूपी बोर्ड के विद्यालयों में कार्यरत हिंदी विषय के अध्यापकों में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के प्रति जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन** किया गया है । इस अध्ययन का उद्देश्य माध्यमिक स्तर के सीबीएसई एवं यूपी बोर्ड के विद्यालयों में कार्यरत हिंदी विषय के अध्यापकों के मध्य सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के प्रति जागरूकता की तुलना करना है जिससे यह ज्ञात किया जा सके कि कौन से अध्यापक सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के प्रति अधिक जागरूक हैं तथा किन अध्यापकों को जागरूक करने की आवश्यकता है । प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक अनुसन्धान के अंतर्गत सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है । प्रस्तुत अध्ययन में समग्र के रूप में सहारनपुर जनपद में स्थित माध्यमिक स्तर के सीबीएसई एवं यूपी बोर्ड के विद्यालयों में कार्यरत हिंदी विषय के अध्यापकों का चयन किया गया है । प्रस्तुत अध्ययन में उपकरण के रूप में **सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी जागरूकता प्रश्नावली** का प्रयोग किया गया है । आंकड़ों के विश्लेषण एवं व्याख्या हेतु माध्य, मानक विचलन, Mann-Whitney U test, ANOVA तथा प्रतिशत विश्लेषण विधियों का प्रयोग किया गया है । अध्ययन के निष्कर्ष प्राप्त हुए – सीबीएसई एवं यूपी बोर्ड के हिन्दी अध्यापकों के सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) के प्रति जागरूकता में सार्थक अंतर है। अतः सीबीएसई बोर्ड के हिन्दी अध्यापक यूपी बोर्ड के हिन्दी अध्यापकों की तुलना में आईसीटी के प्रति अधिक जागरूक हैं।

की–वर्ड – माध्यमिक स्तर, हिन्दी शिक्षक, सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी, जागरूकता

प्रस्तावना

19 वीं शताब्दी औद्योगिक क्रांति का काल मानी जाती है । समाज में होने वाली कोई भी क्रांति शिक्षा को भी प्रभावित करती है और शिक्षा में होने वाली क्रांति का असर समाज पर पड़ता है। सन 1900 से 1930 तक तकनीकी की भूमिका सामान्य शिक्षा तक सीमित रही। धीरे–धीरे प्रिंटिंग तकनीकी का विकास हुआ, परिणामस्वरूप ज्ञान को पुस्तकों में संचित कर प्रकाशित किया जाने लगा। कालांतर में विज्ञान के अन्वेषण जैसे रेडियो, टेलीविजन, फिल्म, कंप्यूटर, आदि ने शिक्षण प्रक्रिया को नया आयाम दिया। आधुनिक सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी का प्रयोग करके आज हम शिक्षण व प्रशिक्षण की पारंपरिक विधियों एवं माध्यमों में सुधार कर सकते हैं तथा उन्हें और अधिक प्रभावी बना सकते हैं। शिक्षा में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी का प्रभावी

एवं अधिकतम उपयोग शिक्षक तथा विद्यार्थियों के बीच की नीरसता को खत्म कर सकता है। सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के उपयोग ने आज अधिगम प्रक्रिया को छात्र केंद्रित तथा स्व केंद्रित बना दिया है। आज सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी की सहायता से विद्यार्थी अपनी गति से कहीं भी तथा कभी भी सीख सकते हैं तथा दक्षता हासिल कर सकते हैं। सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के कारण आज छात्र सामाजिक अंतःक्रिया कर अपने अधिगम को और अधिक सशक्त एवं प्रभावी बना सकते हैं। परंतु किसी भी तकनीकी या तकनीकीयों के समूह को अपनाने से पूर्व शिक्षण संस्थानों को उस तकनीकी से भली भांति परिचित हो जाना चाहिए तथा यह सुनिश्चित करना चाहिए कि शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए यह कितना उपयुक्त है।

एक डिजिटल समाज को उन शिक्षकों की आवश्यकता होती है जो डिजिटली साक्षर हैं। पाठ्यक्रम के बहु–कौशल मांगों को नियंत्रित करने के लिए शिक्षकों को विभिन्न कौशलों में दक्ष होना चाहिए। एक शिक्षण उपकरण के रूप में सूचना और संचार प्रौद्योगिकी में भारी क्षमताएं हैं। इसमें अधिगम की गतिशीलता को प्रभावित करने और शिक्षकों को अपने स्वयं के अर्थ के निर्माण के लिए विषयवस्तु के साथ सहयोग करने की पर्याप्त गुंजाइश है।

पूर्व में किये गए अध्ययनों से ज्ञात होता है **जोशी एवं महापात्र (२०१२)** ने सॉफ्टवेयर की प्रभावशीलता से सम्बंधित एक अध्ययन में पाया कि सॉफ्टवेयर पैकेज के माध्यम से पढ़ाये गए छात्रों ने परंपरागत विधि से सिखाये गए छात्रों की तुलना में काफी बेहतर प्रदर्शन किया ।

मीरा (2010) ने अपने अध्ययन के निष्कर्ष में यह पाया कि ११वी कक्षा में जीवविज्ञान में निर्देशपरक उद्देश्यों को साकार करने में पारम्परिक व्याख्यान विधि की अपेक्षा कम्प्यूटर आधारित निर्देश अभ्यास और अनुकरण अधिक प्रभावी है ।

एलन एवं अन्य के स्कूल के पाठ्यक्रम में शिक्षण और सीखने में आईसीटी के उपयोग को एकीकृत करने के प्रयास में १८ स्कूलों में बदलाव के मोडल पर विश्लेषण के निष्कर्षो की रिपोर्ट से पता चला कि इस तरह के बदलाव और परिवर्तन के परिणामस्वरूप स्कूल द्वारा अपनायी गई आईसीटी रणनीति का उपयोग कर के विद्यालय और शैक्षिक वातावरण में बदलाव लाया जा सकता है ।

राजशेखर एवं वैयापुरी (2014) ने उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों के कंप्यूटर ज्ञान तथा कंप्यूटर के प्रति उनकी अभिवृत्ति पर अध्ययन किया। इस अध्ययन का उद्देश्य शिक्षकों के कंप्यूटर ज्ञान का स्तर ज्ञात करना तथा उनकी कंप्यूटर के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना था। अध्ययन हेतु प्रतिदर्श का चयन पूंजानुसार प्रतिचयन तकनीक के द्वारा तमिलनाडु राज्य के कुडालोर जिले के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत 670 शिक्षकों को किया गया। अध्ययन के परिणाम स्वरुप पाया गया कि संपूर्ण प्रतिदर्श में से केवल 16.70 प्रतिशत शिक्षक ही कंप्यूटर का अच्छा ज्ञान रखते हैं, परंतु शिक्षकों का कंप्यूटर व इंटरनेट के प्रति दृष्टिकोण, रोचक तथा सकारात्मक प्राप्त हुआ। साथ ही साथ शिक्षकों के कंप्यूटर ज्ञान एवं उसके प्रति उनकी अभिवृत्ति में सार्थक संबंध पाया गया है।

वर्मा (2015) ने माध्यमिक स्तर के सरकारी, अर्धसरकारी, गैर सरकारी विद्यालयों के शिक्षकों के कंप्यूटर व इंटरनेट ज्ञान एवं अनुप्रयोग का अध्ययन किया। इस शोध का मुख्य उद्देश्य माध्यमिक स्तर के सरकारी अर्धसरकारी व गैर सरकारी विद्यालयों के शिक्षकों के कंप्यूटर व इंटरनेट ज्ञान एवं अनुप्रयोग का अध्ययन करना था। इसके लिए प्रतिदर्श के रूप में प्रत्येक वर्ग के विद्यालयों से कुल 120 शिक्षकों का चयन किया गया। अध्ययन के परिणामस्वरुप तीनों वर्गों के शिक्षकों को कंप्यूटर ज्ञान निम्न स्तर का है।

मेहरा (2017) ने विद्यालयी शिक्षकों में कंप्यूटर प्रौद्योगिकी के प्रति दृष्टिकोण का निर्धारण करने के लिए एक अध्ययन किया। अध्ययन में चंडीगढ़ सरकारी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के 200 शिक्षकों को प्रतिदर्श के लिए लिया। अध्ययन में यह पता चला कि शिक्षकों में कंप्यूटर उपयोगों के प्रति काफी सकारात्मक दृष्टिकोण है। लेकिन अधिकांश शिक्षकों को निर्देशक सेटिंग्स में कंप्यूटर का उपयोग करने के लिए प्रशिक्षण प्रदान करने की आवश्यकता है।

समस्या कथन

माध्यमिक स्तर के सीबीएसई एवं यूपी बोर्ड के विद्यालयों में कार्यरत हिंदी विषय के अध्यापकों में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के प्रति जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन

अध्ययन की आवश्यकता

कोई भी राष्ट्र अपनी मातृभाषा को पूर्णतः सार्वभौमिक बनाए बिना उन्नति नहीं कर सकता है। इसलिए आज ऐसे अध्ययन की आवश्यकता है जो यह देख सके कि हिन्दी शिक्षकों में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के प्रति जागरूकता एवं शिक्षण प्रभावशीलता की क्या स्थिति है। तथा यह भी देखने की आवश्यकता है कि हिन्दी शिक्षक, शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी का प्रयोग कर रहे हैं अथवा नहीं कर रहे हैं। जिसके आधार पर उक्त क्षेत्र में उपयुक्त सुझाव एवं प्रेरणा दी जा सके।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य माध्यमिक स्तर के सीबीएसई एवं यूपी बोर्ड के विद्यालयों में कार्यरत हिंदी विषय के अध्यापकों में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के प्रति जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन करना है।

शोध परिकल्पना

सीबीएसई एवं यूपी बोर्ड के हिन्दी अध्यापकों के सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) के प्रति जागरूकता में सार्थक अंतर है।

अनुसंधान विधि

प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

अध्ययन की जनसंख्या

प्रस्तुत अध्ययन की जनसंख्या में उत्तर प्रदेश के सहारनपुर जनपद में स्थित केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड एवं यू पी बोर्ड द्वारा संचालित सरकारी और निजी विद्यालयों में हिन्दी विषय का अध्यापन करने वाले शिक्षकों को लिया गया है।

प्रतिदर्श का प्रारूप

प्रस्तुत अध्ययन के प्रतिदर्श के रूप में सहारनपुर जनपद के माध्यमिक स्तर के केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड एवं यू पी बोर्ड द्वारा संचालित विद्यालयों में हिन्दी विषय का अध्यापन करने वाले 232 शिक्षकों को सम्मिलित किया गया है।

अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण

प्रस्तुत अध्ययन में उपकरण के रूप में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी जागरूकता प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है।

सांख्यिकीय विश्लेषण

आंकड़ो के विश्लेषण हेतु माध्य, मानक विचलन, Mann-Whitney U test, ANOVA तथा प्रतिशत विश्लेषण शामिल है।

उद्देश्य

माध्यमिक स्तर के सीबीएसई एवं यूपी बोर्ड के विद्यालयों में कार्यरत हिंदी विषय के अध्यापकों में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के प्रति जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन करना

परिकल्पनाएँ

H1 सीबीएसई एवं यूपी बोर्ड के हिन्दी विषय के अध्यापकों में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) के प्रति जागरूकता में सार्थक अंतर है।

Ho1 सीबीएसई एवं यूपी बोर्ड के हिन्दी विषय के अध्यापकों में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) के प्रति जागरूकता में सार्थक अंतर नहीं है।

बोर्ड के आधार पर शिक्षकों का वितरण

बोर्ड	शिक्षकों की संख्या
सीबीएसई बोर्ड	125
यूपी बोर्ड	107
कुल	**232**

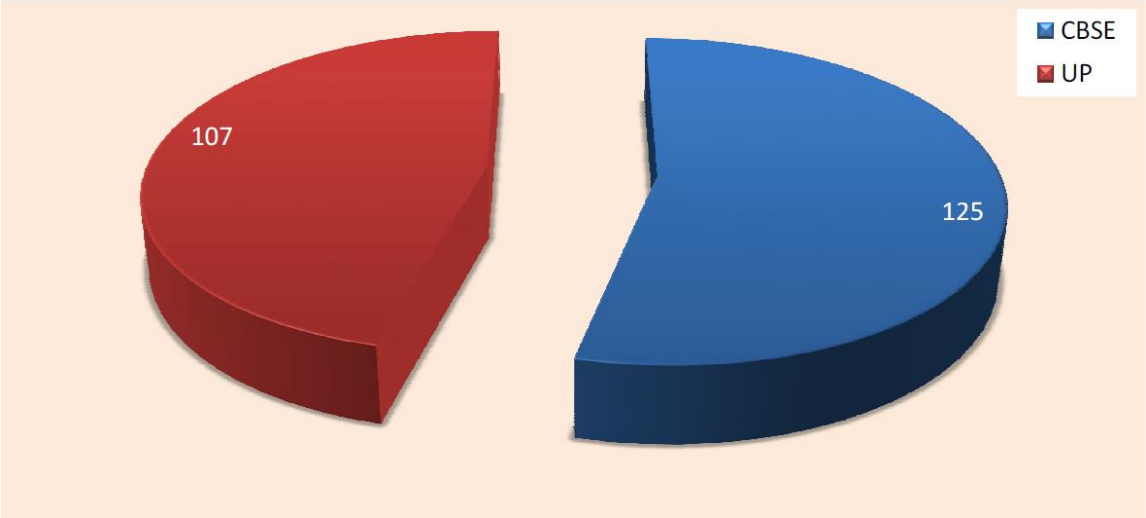

बोर्ड के आधार पर शिक्षकों का वितरण

सीबीएसई एवं यूपी बोर्ड के हिन्दी अध्यापकों के सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) के प्रति जागरूकता की तुलना

बोर्ड	शिक्षकों की संख्या	Mean of Ranks	Sum of Ranks	Mann-Whitney U	p-value	Level of Significance
सीबीएसई	125	132.82	16602.50	4647.500	0.000	S
यूपीबोर्ड	107	97.43	10425.50			

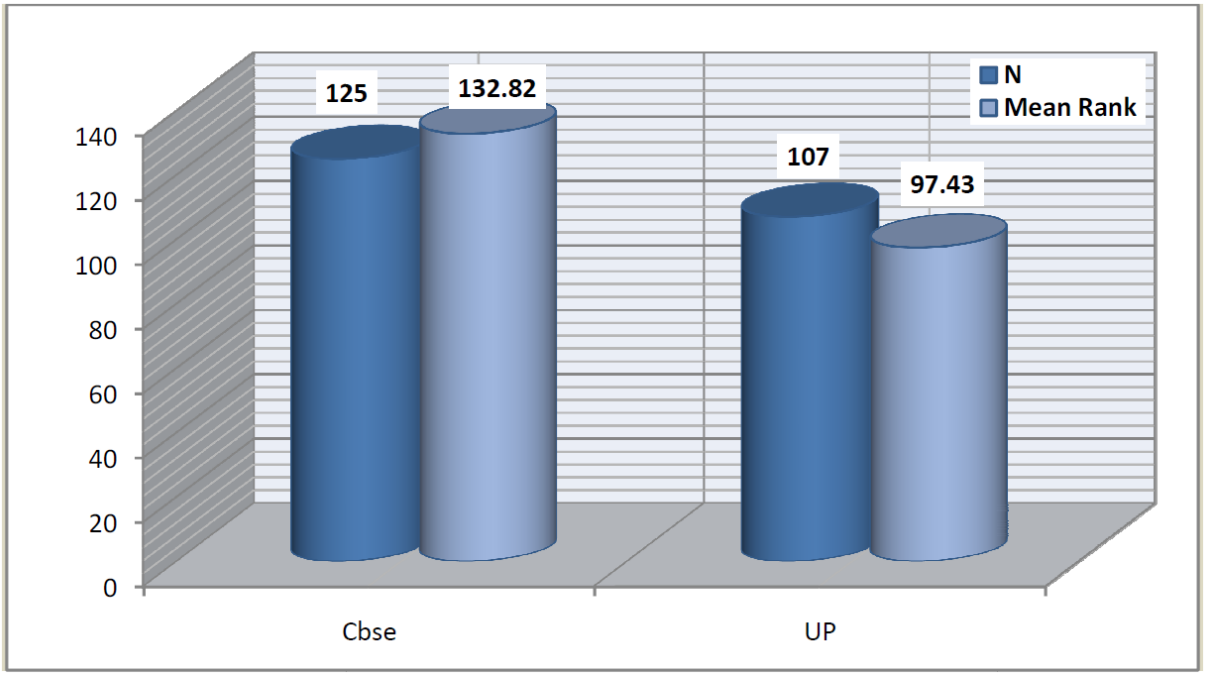

सीबीएसई एवं यूपी बोर्ड के हिन्दी अध्यापकों के सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) के प्रति जागरूकता का विवरण

प्रस्तुत परिणामों से स्पष्ट है कि प्राप्त Mann -Whitney U मान 4647.500 ($p<0.05$) सार्थकता स्तर 0.05 पर सार्थक है। अतः संबन्धित शून्य परिकल्पना को अस्वीकार करते हुए यह निष्कर्ष निकलता है कि सीबीएसई एवं यूपी बोर्ड के हिन्दी अध्यापकों के सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) के प्रति जागरूकता में सार्थक अंतर है। चूंकि सीबीएसई बोर्ड के अध्यापक का Mean Rank (132.82) यूपी बोर्ड के अध्यापक के Mean Rank (97.43) से अधिक है अतः सीबीएसई बोर्ड के हिन्दी अध्यापक यूपी बोर्ड के हिन्दी अध्यापकों की तुलना में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) के प्रति अधिक जागरूक हैं।

अध्ययन के परिणाम एवं निष्कर्ष

सीबीएसई एवं यूपी बोर्ड के हिन्दी अध्यापकों के सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) के प्रति जागरूकता में सार्थक अंतर है। अतः सीबीएसई बोर्ड के हिन्दी अध्यापक यूपी बोर्ड के हिन्दी अध्यापकों की तुलना में आईसीटी के प्रति अधिक जागरूक हैं।

जिसका कारण संभवतः यह हो सकता है कि सीबीएसई बोर्ड के जितने भी विद्यालय हैं उनमे ं अधिकांशतः विद्यालयों में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के प्रयाप्त संसाधन उपलब्ध हैं जिससे वे शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में उनका अधिकाधिक प्रयोग करते हैं तथा उनसे सम्बंधित जानकारियों के प्रति अद्यतन रहते हैं। जबकि यूपी बोर्ड के अधिकांश विद्यालयों में आज भी सूचना

एव संचार प्रौद्योगिकी से सम्बंधित साधनों एवं प्रशिक्षण का घोर अभाव है। जिसके कारण अध्यापक इनमे लगातार आ रहे बदलाव और प्रयोगों से अनभिज्ञ हैं। परिमाणतः यूपी बोर्ड के हिन्दी अध्यापकों में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के प्रति जागरूकता का स्तर सीबीएसई के हिन्दी अध्यापकों से कम पाया गया।

वर्तमान शोध अध्ययन में सीबीएसई और यूपी बोर्ड के हिन्दी अध्यापकों के सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के प्रति जागरूकता में सार्थक अंतर पाया गया है। सीबीएसई बोर्ड के हिन्दी अध्यापक यूपी बोर्ड के हिन्दी अध्यापकों की तुलना में आईसीटी के प्रति अधिक जागरूक हैं। अतः यूपी बोर्ड के हिन्दी अध्यापकों को सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के प्रति जागरूक होने की आवश्यकता है। जिसमे सरकार एवं विद्यालय प्रशासन को प्रभावी कदम उठाने की आवश्यकता है। अध्यापक अपने पारिवारिक और सामाजिक परिवेश में उपलब्ध इन साधनों का व्यक्तिगत उपयोग करके भी अपनी जागरूकता के स्तर को बढ़ा सकते है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

वैड, वी. (2004). *हाई स्कूल स्तर के शिक्षकों का रेडियो टेलीविज़न आदि संचार माध्यमों द्वारा प्रसारित शैक्षिक कार्यक्रमों के प्रति उनके दृष्टिकोण का अध्ययन* पी–एच.डी (शिक्षाशात्र). मुंबई विश्वविद्यालय. मुंबई

जायसवाल, पी. (2016). *विश्वविद्यालय स्तर पर अध्यापक शिक्षा एवं अन्य विभागों के शिक्षकों में आधुनिक सम्प्रेषण माध्यमों के प्रति जागरूकता एवं व्यावहारिक प्रयोग का तुलनात्मक अध्ययन.* अप्रकाशित डॉक्टरल थीसिस. काशि हिन्दु विश्वविद्यालय. वाराणसी

पैट्रिक, ए. डी. जे. (1999). *सूचना विज्ञान.* पी–एच.डी. लूसियाना यूनिवर्सिटी लूसियाना.

नारायणस्वामी एवं थंगास्वामी (2011). *जिला शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थानों में कंप्यूटर का उपयोग* . पी–एच.डी (शिक्षाशात्र). मद्रास विश्वविद्यालय. मद्रास